साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 44, सितम्बर(प्रथम) , 2018

कुमाउनी लोकगाथाओं में श्रृंगार रस

पवनेश ठकुराठी 'पवन'

कुमाऊँ की लोकगाथाएँ प्राचीन कुमाउनी सभ्यता संस्कृति एवं लोकजीवन की परिचायक हैं। वर्ण विषय की दृष्टि से यहां की लोकगाथाओं को परम्परागत, पौराणिक, धार्मिक और वीर गाथाओं के रूप में विभाजित किया जा सकता है। परम्परागत लोकगाथाओं में राजुला-मालूशाही और रमौल, धार्मिक लोकगाथाओं में गोलू देवता, गंगनाथ, मसाण, भूमियां, सैम, नंदादेवी आदि के जागर और वीर गाथाओं में अजुआ-बफौल, भीमा कठैत, परमा रौतेला, रतुआ फड़त्याल आदि की लोकगाथाएँ प्रसिद्ध हैं। जियारानी, गौरा-महेश्वर, कालू भंडारी, कलबिष्ट, गोरिधना, कालसिंण, रामी-बौराणी यहां की अन्य प्रसिद्ध लोकगाथाएं हैं।

कुमाउनी लोकगाथाओं में श्रृंगार, वीर, शांत, भक्ति और अद्भुत रसों की स्थापना हुई है। श्रृंगार और वीर रस इन लोकगाथाओं में सर्वाधिक पाये गये हैं। कुमाऊँ की राजुला-मालुशाही, रमौल, नंदादेवी, गौरा-महेश्वर, दूध-कंवल, भाना-गंगनाथ, ब्रह्मकंवल, सुरजू-कुंवर, बाइस भाई बफौल, रामी-बौराणी आदि लोकगाथाओं में श्रृंगार रस की निष्पत्ति हुई है। श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का चित्रण इन लोकगाथाओं में हुआ है। कुमाऊँ में प्रचलित राजुला-मालूशाही, दूधकंवल, हुड़की बौल, आठूं, रमौल आदि लोकगाथाओं में नायक-नायिका के स्वप्न देखने, मिलन स्थल पर पहुंचने, एक-दूसरे से मिलने के लिए आतुर होने आदि प्रसंगों में संयोग श्रृंगार का

सुंदर चित्रण हुआ है। उत्तराखण्ड में सर्वाधिक प्रसिद्ध राजुला-मालूशाही की लोकगाथा में राजुला सपने में मालूशाही को देखती है और उस पर मोहित हो जाती है-

"स्वेंणी का सुपीना कौंछ
राजा को कुँवर
दुलसायी को चेलो छौं मैं
मालूसायी छ नाम
रंगीली बैराठ हमरो रे राजा
खितुक हंसैछ मुल्या
कुँवरा का मुख चाई
मोहित है गेछ....।

दूधकँवल की लोकगाथा में कँवल के सोभन रूप पर पहाड़ की चेली मोहित हो जाती है और कहती है-

"द इतुक देखेनूं इतुक रूपौसौ
तू कां जनेर हौले, तू का बठे जै आछै।"

हुड़की बौल में राजा बिरमा और दुलकापधानी के प्रसंगों में संयोग श्रृंगार की खूबसूरत सृष्टि हुई है। आठूँ की लोकगाथा में गौरा-महेश्वर के मिलन के दौरान आंखरी में संयोग श्रृंगार का निरूपण हुआ है-

"महेसर लै आब, जस-जस गहना गड़ाया
तस-तस लौलि लै, गलै लै लगाया

मैं नाच नि ऊंनूं, महेसर घुण लचकाया
नांचना-नांचना, गौरा महेसर बाटा लागि गया।

गंगनाथ की लोकगाथा में भी भाना और गंगनाथ प्रसंगों में संयोग श्रृंगार अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर लोकगाथा को और अधिक रूचिकर बनाता है।

संयोग श्रृंगार की तरह कुमाऊँ की लोकगाथाओं में वियोग श्रंृगार का भी मार्मिक चित्रण हुआ है। यहां की राजुला-मालुशाही लोकगााथा में राजुला अपने प्रेमी मालूशाही को देखने के लिए अकेले ही जोहार (भोटिया प्रदेश)से बैराठ के लिए रस्ते लग जाती है। प्रेमी के प्रति उसकी विरह पीड़ा, जिज्ञासा देखने लायक है-

‘‘दुती कसी जून न्हैगे, पुन्यू कसी चाना
बाटा लागी गेछ राजुली एकलै पराना
दिखाई दिये तु मैंके बैराठ को राजा
सुनंू टांका भेट चढ़ूंलो जोहार की देवी
राजा मालूशाही कणी मैं दिखाई दियै।‘‘

हुड़की बौल में राजा बिरमा, रानी दुलपधानी के लिए व्याकुल रहता है। राजा उसके सुन्दर रूप को देखकर उसके साथ विवाह करना चाहता है। उसकी वियोग दशा उल्लेखनीय है-

‘‘म्यार मन लागी दुलकापधानी भिका
ये सुनरि खाट लगै लागनि उप्पन भिका

छुलपधानी लिऔ छै रै पहरी भिका
तब खूंलो अन्न पाणि पहरी भिका।"

'आठूँ' की लोकगाथा में गौरा (पार्वती) पूजा का सामान लेने के लिए अपने 'मैत' चले जाती है। महेश्वर (शिवजी) उसके वियोग में उसे खोजते हुए पेड़-पौधों से उसका पता पूछते हैं-

"बाटा म कि किरमोड़ि डाली
कि त्वैले मेरि लौलि ले देखी
लौलि ले मेरो कयो नि माना
हांगा-फांगा तोड़ि गै लौलि।"

कुमाऊँ की पिथौरागढ़ जिले की जोहार घाटी में प्रचलित 'सुनपति शैकाकि चेलि' नामक लोकगाथा में वियोग श्रृंगार रस का मार्मिक चित्रण हुआ है। नायक का नायिका के लिए विरह-वियोग दर्शनीय है-

"वी देखींछ, वी सुनींछ कटिया हल्द जसी
वी देखींछ, वी सुनींछ दुतिया की जून जसी
वी देखींछ, वीं सुनींछ धार में शुकर जसी
मांगी दे मांगी दे बुबा सुनपति शैकाकि चेली।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कुमाउनी लोकगाथाओं में श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनो पक्षों का मार्मिक, मनोहारी और लोकपक्षीय चित्रण हुआ है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें